आरती कीजै हनुमान लला की ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

जाके बल से गिरिवर कांपे ।
रोग दोष जाके निकट न झांके ॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई ।
संतन के प्रभु सदा सहाई ॥

दे बीरा रघुनाथ पठाए ।
लंका जारि सिया सुधि लाए ॥

लंका सो कोट समुद्र-सी खाई ।
जात पवनसुत बार न लाई ॥

लंका जारि असुर संहारे ।
सियारामजी के काज संवारे ॥

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे ।
आनि संजीवन प्राण उबारे ॥

पैठि पाताल तोरि जमकारे ।
अहिरावण की भुजा उखारे ॥

बाईं भुजा असुर दल मारे ।
दाहिने भुजा संतजन तारे ॥

सुर नर मुनि जन आरती उतारे ।
जै जै जै हनुमान उचारे ॥

कंचन थार कपूर लौ छाई ।
आरती करत अंजना माई ॥

जो हनुमानजी की आरती गावे ।
बसि बैकुंठ परमपद पावे ॥

समाप्त